प्रातःक्लास 26/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बेहद का बाप बैठकर बच्चों को समझाते हैं। हर एक बात एक हद की होती है दूसरी बेहद की होती है। इतना समय तुम हद में थे। अभी बेहद में हो। पढ़ाई भी बेहद की है। बेहद की बादशाही की(ी) पढ़ाई। इससे बड़ी पढ़ाई कोई होती नहीं। कौन पढ़ाते हैं? बेहद का बाप भगवान। शरीर निर्वाह अर्थ भी सभी कुछ करना है। फिर भी अपनी उन्नति के लिए करना होता है। बहुत नौकरी में होते भी उन्नति के लिए पढ़ते हैं। वह है हद की बातें। यहां बेहद के पास बेहद की उन्नति होती है। बाप कहते हैं हद की औ(र) बेहद की दोनों करो। बुद्धि से समझते हैं बेहद की सच्ची कमाई अभी करनी है। यहां तो यह सभी मिट्टी में मिल जाना है। जितना–2 तुम बेहद की कमाई में ज़ोर भरते जावेंगे हद की कमाई के बातों का विनाश होता जावेगा। सभी समझ जावेंगे अभी विनाश होना है। विनाश नज़दीक होगा तो भगवान को ढूँढेंगे। विनाश होता है तो ज़रूर स्थापना करने वाला भी होगा। दुनियां तो कुछ भी नहीं जानती। तुम प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियां भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पढ़ाई पढ़ रहे हो। हॉस्पिटल में स्टूडेन्ट वह रहते हैं तो पढ़ते हैं; परन्तु यह हॉस्पिटल तो न्यारी है। इस हॉस्पिटल में तो ऐसे भी रहते हैं। शुरू में चले आये थे तो वह रह गये हैं। ऐसे ही आ गये। वैरायटी आ गये। ऐसे नहीं कि सभी छोटे–2 बच्चे भी ले आये। तुम बच्चों को सम्भालते थे। फिर उनसे भी तो कितने चले गये। बुलबुल के साथ चीही भी फंसाते हैं ना। सभी चाहिए ना। चीही, बुलबुल मैना, डेडर आदि सभी चाहिए। बगीचे में पक्षी भी देखो, फूल भी देखो। कैसे–2 टिकलु–2 करते हैं। यह मनुष्य सृष्टि भी इस समय ऐसी है। जब बाप समझाते हैं तो तुम जान जाते हो। हम तो बिल्कुल जंगली बड़े–2 एप्स थे। जंगल में जनावर मिसल थे। कोई सभ्यता नहीं थी। सभ्यता वालों की महिमा, पूजा आदि करते थे और अपन को पापी, नीच कहते थे। निर्गुणहारे में कोई गुण नाहीं। भल कितने भी बड़े–2 आदमी होते हैं, वह भी फील तो करते होंगे। मनुष्य भगवान रचयिता को न जाने तो वह मनुष्य क्या काम का? तुम कुछ भी काम के न थे। अभी तुम समझते हो बाप की तो कमाल है। बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। जो राजाई हमसे कोई भी छीन न सके। ज़रा भी कोई विघ्न डाल न सके। क्या से क्या बनते हैं। तो ऐसे बाप के डायरैक्शन पर, श्रीमत पर चलना चाहिए ना। भल दुनियां में कितने भी हंगामे ,ग्लानी आदि होती है। वह तो कोई नई बात नहीं। 5000 वर्ष पहले भी हुआ था। शास्त्रों में भी है बच्चों को बताया है यह शास्त्र जो भक्तिमार्ग में बने हैं वह अभी छोड़ दो। वह तो फिर भी भक्ति मार्ग में पढ़ेंगे। इस समय तुम ज्ञान से सुखधाम जाते हो। इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। जितना अभी पुरुषार्थ करेंगे वह कल्प–2 होता रहेगा। अपनी अन्दर जांच करो कहाँ तक हम ऊँच बने हैं। यह तो हर एक स्टूडेन्ट समझ सकते हैं। जितना अच्छा पढ़ेंगे तो ऊपर जावेंगे। यह तो हम से होशियार है। हम भी होशियार बनें। अल्पकाल के सुख के लिए कितनी मेहनत करते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 कितना बड़ा बाबा है। साकार बाप भी है, निराकर बाप भी है। दोनों इकट्ठे हैं। दोनों मिलकर कहते हैं मीठे–2 बच्चों अभी तुम बेहद की पढ़ाई को समझ गये हो। और तो कोई जानते नहीं। पहली बात तो हमको पढ़ाने वाला कौन है? भगवान क्या पढ़ाते हैं? राजाई। तुम राजऋषि हो ना। वह है ही योगी। भल है ऋषि; परन्तु हद के। वह कहते (भी) हैं हमने घर–बार छोड़ा है। यह कोई काम अच्छा किया है क्या? तुम घर–बार तब छोड़ते हो जब तुमको विकार के लिए तंग करते हैं। उनको क्या तंगी हुई? तुमको मार पड़ती है तब ही(ी) भागते हो। एक–2 से पूछो। कुमारियों से स्त्रियों ने मार खाई है तब चले आये हैं। शुरू में कितने आ गये। यहां मिलता था ज्ञान अमृत। तो चिट्ठी भी ले आये हम ज्ञान अमृत पीने लिए ओमराधे के पास जाती हैं। विख के ऊपर झगड़ा शुरू से लेकर चला आता है। यह बंद तब होगा जब आसुरी दुनियां का विनाश होगा। फिर आधा कल्प के लिए बन्द हो जावेगा। अभी तुम

बाप से बेहद का प्रारब्ध लेते हो। बेहद का बाप सभी को बेहद का प्रारब्ध देते हैं। हद का प्रारब्ध। यह भी सिर्फ़ बच्चे को वर्सा मिलता है। यहां तो बाप कहते हैं बच्ची हो या बच्चा दोनों वर्से के हकदार हैं। उस लौकिक बाप पास भेद रहता है। सिर्फ़ बच्चे को वर्सा देते है। स्त्री को हाफ पार्टनर कहते है; परन्तु उनको भी हिस्सा देते थोड़े ही हैं। बच्चे ही सभी ले लेते हैं। अभी गवर्मेन्ट पास कौन जावे? बाप का बच्चों में मोह रहता है। यह बाप तो कायदे अनुसार सभी बच्चों (आत्माओं) को वर्सा देते हैं। बच्ची वा बच्चे की कोई भेद ही नहीं। तुम कितना सुख का वर्सा बेहद के बाप से लेते हो। फिर भी पूरा पढ़ते नहीं हैं। पढ़ाई को छोड़ देते हैं। बच्चियां लिखती हैं बाबा, यह नहीं आते हैं। बल्ड(ब्लड) से लिखकर भी दिया। बाबा, आप प्यार करो चाहे मारो, आपको हम कब नहीं छोड़ेंगे। बल्ड(ब्लड) से लिखकर परवरिश भी लेकर फिर चले जाते हैं। बाप ने समझाया है यह सभी ड्रामा है। कोई आश्चर्यवत् भागन्ति भी होंगे। यहां बैठे निश्चय भी होता है ऐसे बेहद के बाप को हम कैसे छोड़ेंगे? वह तो पढ़ाते (भी) हैं। गैरन्टी करते हैं हम साथ ले जाऊँगा। पाण्डव सेना का मि़ख्या(मुखिया) है ना। तुम श्रीमत पर चलो तो हम सभी को ले जाऊँगा। सतयुग आदि में इतने सब थोड़े ही थे। अभी संगम पर सभी हैं। कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में तो बहुत थोड़े होंगे। इतने .... धर्म वाले कोई भी न रहेंगे। इसके लिए सारी तैयार(ी) हो रही है। शरीर छोड़कर शान्तिधाम चले जावेंगे हिसाब–किताब चुक्तू कर। जहां से आये हैं पार्ट बजाने वहां चले जावेंगे। वह होता है हद का नाटक। यह है बेहद का नाटक। तुम जानते हो हम उस घर के रहवासी हैं। और हैं भी एक बाप के बच्चे। रहने का स्थान है निर्वाणधाम। वाणी से परे। वहां आवाज़ होता नहीं। मनुष्य समझते हैं ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। बाप कहते हैं आत्मा तो अविनाशी है। वह कब विनाशी हो न सके। कितने जीवात्माएं हैं। आत्मा अविनाशी है। जीव द्वारा पार्ट बजाती है। सभी आत्माएं ड्रामा के एक्टर्स हैं। रहने का स्थान है ब्रह्माण्ड। वह घर है। आत्माएं अण्डे मिसल दिखाई पड़ती हैं ना। वहां रहने का स्थान है। हर एक बात को अच्छी रीत समझना है। नहीं समझते हैं तो आगे चलकर आपे ही समझ जावेंगे। अगर सुनते रहेंगे तो। छोड़ेंगे तो फिर कुछ भी समझेंगे नहीं। तुम बच्चे जानते हो इस पुरानी दुनियां ख़त्म हो नई दुनियां स्थापन होती है। बाप कहते हैं कल तुम विश्व के मालिक थे अभी फिर तुम विश्व के मालिक बनने आये हो। गीत भी है ना बाबा हमको ऐसा मालिक बनाते है जो कोई भी छीन न सके। आकाश, ज़मीन आदि सभी पर हमारा अधिकार रहता है। यहां तो दुकड़ा–2 कर दिया है। पानी पर भी झगड़ा चलता है। अपनी–2 टुकड़ी–2 अलग–2 कर दी है। अन्दर में कितनी शैतानी रहती है। यह ब्रिटिश गवर्मेन्ट की ठगी है; परन्तु किसकी भी बुद्धि में नहीं आता। उन्हों को आमदनी होती है बहुत। तो उनको युक्ति से छोड़ते नहीं हैं। नहीं तो प्राईम मिनिस्टर किसकी न सुने। क्वीन का भी न सुनें। ऐसा कब देखा। क्वीन नहीं समझती होगी कि यह ठगी करते हैं। जो मेरी भी नहीं मानते हैं। अन्दर है सारी ठगी। इन जैसे ठगी कोई कर न सके। इस दुनियां में देखो क्या–2 है। सभी हैं मतलब के साथी। वहां तो ऐसे नहीं होगा। जैसे लौकिक बाप बच्चों को कहते हैं ना यह धन, माल सभी कुछ तुमको देकर जाते हैं। उनको अच्छी रीत सम्भालना। बेहद का बाप भी कहते हैं तुमको सभी धन–माल देते हैं। तुमने हमको बुलाया है पावन दुनियां में ले चलो तो ज़रूर पावन बनाकर विश्व का मालिक बनावेंगे ना। बाप कितना युक्ति से समझाते हैं। इनका नाम ही है सहज ज्ञान , सहज योग। सेकण्ड की बात है। सेकण्ड में मुक्ति मिलती है। तुम अभी कितने दुरनदेश बुद्धि हो गये हो। यही चिंतन होता रहे। हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं। हम अपने लिए राज्य स्थापन कर रहे हैं। तो उसमें हम ऊँच पद क्यों नहीं पावेंगे? कम क्यों पावें? राजधानी स्थापन होती है उसमें सभी मर्तबे होंगे ना। दास–दासियां भी ढेर होंगी। वह भी बहुत सुख पाते हैं। साथ में महलों में रहेंगे। बच्चों आदि की(को) सम्भालती होंगी। कितना सुखी होंगी।

सिर्फ़ नाम है दासी। जो राजा–रानी खाते वही दास–दासियां भी खाती हैं। प्रजा में तो नहीं मिलता होगा। इतना मान होता है दासियों का। फिर उनमें भी नम्बरवार होते हैं। सारी सलतनत को याद करो। कलयुग में है अनेक। सतयुग में है एक। सारे विश्व के मालिक बनते हो। दास–दासियां तो यहां भी राजाओं पास होती हैं। प्रिंसेज़ की सभा जब लगती है तो आपस में मिलते हैं तो फुल श्रृंगार किये हुये ताज आदि सहित होते हैं। फिर उनमें भी नम्बरवार। बड़ी शोभनिक सभा लगती है। उसमें रानियां नहीं बैठती हैं। वह पर्दे में रहती हैं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। उनको तुम प्राणदाता भी कहते हो। जीयदान देने वाला। घड़ी–2 छोड़ने से बचाने वाला। वहां मरने की चिंता नहीं रहती। यहां तो कितनी चिंता रहती है। थोड़ा कुछ हुआ, बुलावेंगे डॉक्टर को कि कहां मर न पड़े। वहां डर की बात ही नहीं। कुम काल पर जीत पाते हो तो कितना नशा होना चाहिए। पढ़ाने वाले को याद करो तो भी याद की यात्रा हुई। बाप, टीचर, सदगुरू को याद करो तो भी ठीक है। तितना(जितना) श्रीमत पर चलेंगे। गायन भी है मंसा, वाचा, कर्मणा पावन बनना है। बुद्धि में विकारी संकल्प भी न आये। वह तब होगा जब भाई–2 समझो। बहन–भाई समझने से भी छी–2 हो जाते हैं। तभी बाप ने कहा है भाई–2 समझो। मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ। आत्माओं को पढ़ाता हूँ। आत्माओं का बाप कहते हैं दादा भी मेरे साथ है। बाबा दृष्टि देंगे तो दादा भी साथ में होगा। यह कितना अच्छा है। कितनी अच्छी सर्विस करते हैं। आँखें धोखा देती (हैं); इसलिए बाप कहते हैं तीसरा नेत्र दिया है। अपन को आत्मा समझ भाई–2 देखो। इसको कहा जाता है ज्ञान का तीसरा नेत्र। बहन–भाई में फेल होते हैं। तो दूसरी युक्ति निकाली जाती है। अपन को भाई–2 समझो। बड़ी मेहनत है। सबजेक्ट्स होते हैं ना। यह भी पढ़ाई है। तो इस(में) यह ऊँच सबजेक्ट है। जिससे नाम–रूप से नहीं फंस सकते। बहुत बड़ा इम्तहान है विश्व का मालिक बनने का। मुख्य बात बाप कहते हैं भाई–2 समझो। यह बाप, टीचर, सदगुरू तीनों ही हैं। अज्ञान काल में बाप, टीचर, गुरू क्या सिखलाते हैं वह तो मालूम है। बाप विकार में ले जाते हैं। टीचर पढ़ाते हैं। गुरू हद का ज्ञान देते हैं। यह बाप तो बेहद का सुख देते हैं तो इतना पुरुषार्थ करना चाहिए ना। चलते–2 कितने ट्रेटर भी बन पड़ते हैं। उस लड़ाई के मैदान में भी ऐसे होता है। एक/दो से मिलकर फिर दुश्मन बन पड़ते हैं यहां भी ऐसा होता है। अच्छे–2 बच्चों को भी माया अपना बना लेती है। तब बाबा कहते हैं मुझे फारकती भी देते हैं। डायवोर्स भी देते हैं। फारकती बच्चे .... के होते हैं, डायवोर्स स्त्री–पुरुष का होता है। बाप कहते हैं हमको दोनों ही मिलती है। अच्छी–2 बच्चियां भी डायवोर्स दे जाये रावण की बनी। वण्डरफुल केस हुआ। माया क्या न कर सकती है। बाप कहते हैं माया बहुत कड़ी है। गायन है ना गज को ग्राह ने खाया। बहुत गफ़लत कर बैठे हैं। बाप से भी बेअदबी करते हैं तो माया एकदम कच्चा खा लेती है। जैसे सर्प मेंढक को हप करती है। माया ऐसी है। कोई को एकदम पकड़ लेती है। अच्छा, बच्चों को कितना सुनाकर कितना सुनाऊँ। मुख्य बात है अलफ़। मुसलमान लोग भी कहते हैं उठकर अलफ़ को याद करो। यह वेला सोने का नहीं है। इस उपाय से ही विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय नहीं। बाप तो बच्चों के साथ कितना वफ़ादार है। कब छोड़ेंगे नहीं। आये ही हैं सुधारकर साथ ले जाने। याद की यात्रा से ही तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। उस तरफ जमा हो जावेगा। बाप कहते हैं अपनी चौपड़ी रखो। हम क्या याद करते हैं। सर्विस करते हैं। व्यापारी लोग घाटा देखते हैं तो ख़बरदार रहते हैं। घाटा न डालना चाहिए। कल्प–कल्पांतर का घाटा पड़ता जावेगा। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग नमस्ते।

डायरैक्शनः– सर्विसएबुल बच्चियां चाहती हैं एक फाजूल्का, नाभा अलवर, खुरजा और बनारस, फर्रूखाबाद (म्युज़ियम) इ(न)हों सेन्टर्स लिए कोई सर्विसएबुल शेरनी की ज़रूरत है। कोई तैयार हो तो बाबा को पत्र लिखो फौरन। अच्छा। ओमशान्ति।